केदारमान व्यक्ति

असिश्रु

यस 'ग्रग्नि-शृङ्गार'लाई "हितं मनोहारी च दुर्लभं वचः" के ग्रर्थ-सम्पदा भएका युग-बोधका सशक्त शब्द-चित्रहरूकै ग्रलबम भने हुन्छ । यवनिकाभित्र सम्पन्न हुने गरेका निष्ठुरतापूर्ण छल-छद्महरूलाई उदाङ्ग पानं सफल भएका ध्यङ्ग बिम्बहरू धेरंजसो यसका निकं ने मर्मस्पर्शी छन्। ग्रमानवीय कर्म-निर्लज्जताप्रतिको म्राक्रोशपूर्ण पौरुष-चेतना ने यस मुक्तक काव्यको ऊर्जा हो। वैविध्य-पूर्ण प्रकृति-वैशिष्टचको मानवी-करण र हृदयको श्राकाशलाई मधुरता प्रदान गर्ने अनुरागका जीवन्त सिर्काहरू यसका थप विशेषताहरू हुन्।

-माधवलाल कर्माचार्य

अग्नि-श्रृङ्गार

केदारमान व्यथित

प्रथम संस्करण भाद्र २०३६ सर्वाधिकार लेखकमै सुरक्षित

श्री विनोद सिंहद्वारा प्रकाशित तथा दीपक प्रेस, पुल्चोक पाटनमा मुद्रित सानी छोरी अर्चनालाई

मूल्य सात रूपियाँ

धन्यवाद ज्ञापन

झंठ्रट नमानी प्रूफ हेर्ने कार्य सम्पन्न गर्नुकासाथै पुस्तकका सम्बन्धमा छोटकरीमा भए पिन सार-गिभत मन्तव्य दिई मलाइ सघाउ पुऱ्याउनु भएकोमा किव तथा समालोचक श्री माधवलाल कर्माचार्य र मुख-पृष्ठको लागि आवरण चित्र तयार गरी मलाइ अनुगृहित गर्नु भएकोमा उदीयमान किव एवं चित्रकार श्री जीवन आचार्यलाइ तथा तत्परताका साथ अल्प अवधिमै किताब छपाइको काम सम्पन्न गरी मलाइ प्रसन्नता प्रदान गर्नु भएकोमा दीपक प्रिन्टिङ्ग प्रेसका मालिक मेरा प्रिय मित्र श्री जगत बहादुर सिहलाइ, मुरी-मुरी धन्यवाद अपंण गर्दछु। अस्तु।

- व्यथित

शीर्षंक अनुसूची

| पेज |
|------------------|
| 99 |
| 92 |
| 93 |
| १४ |
| 94 |
| 98 |
| 99 |
| 95 |
| 39 |
| २० |
| 29 |
| २१ |
| ກລ |
| २२ २२ |
| 22 |
| २२ |
| 53 |
| २३ २ ३ |
| 23 |
| 23 |
| |

| जाल | 28 |
|--------------|------------|
| बादल | २४ |
| आखेट | 28 |
| राहु | 78 |
| पानी | २४ |
| किन-बेच | २४ |
| परम्परा | २४ |
| अनर्थ | ર પ |
| काल-चेतना | २६ |
| इव्ट | 78 |
| उदात्त कामना | . ` २६ |
| प्रतिज्ञा | २६ |
| जीवन | 79 |
| घूप | २७ |
| सेतु | २७ |
| छाप | 70 |
| अनिकाल | २५ |
| स्वर्ग | २८ |
| देवता | २६ |
| बिन्दु | २६ |
| छाया | 38 |
| विकृति | 35 |
| सींढी | 35 |
| अग्नि | 78 |
| | 70 |

| रस | ₹0 |
|---------------|-----|
| काव्य | 30 |
| मविष्य | ₹0 |
| सर्पं | ₹9 |
| परेवा | 3 8 |
| अश ু | ₹? |
| घाम | 38 |
| गन्ध-चोर | 32 |
| इन्द्रेणी | 38 |
| आशीर्वाद | 38 |
| स्थायी-भाव | 38 |
| मोह | 38 |
| मघुमास | 38 |
| रहर | 38 |
| सीन्दर्यं | ₹₩ |
| भूइँचम्पा | ₹X |
| ऐश्वयं | 3 % |
| अर्थ-सङ्केत | ३६ |
| सृष्टि-माधुयँ | ३६ |
| अनुराग | ३६ |
| चन्द्रमा | ₹ ७ |
| काल-चेतना | र ७ |
| घोषणा | ३७ |

| शब्द-शक्ति | ३८ |
|-------------------------|------|
| स ङ्घर्ष | ₹प |
| वीर्य-हीनता | .३ द |
| विष्णुमती | 3 € |
| छाप | 3 € |
| सीमाना | 80 |
| आत्म-गौरव | ४० |
| वीर्यं-चेतना | ४१ |
| निर्वन्घता | ४१ |
| खाँचो | ४२ |
| नेतृत्व | ४२ |
| असावघानीः त्यसको परिणाम | ४३ |
| बीर्य-चेतना | ४३ |
| विश्व-बन्धुत्व | 88 |
| सङ्कल्प-सौन्दर्यं | ४४ |
| मृत्यु-बोघ • | ४४ |
| वरदान | ४४ |
| अर्थ-हीनता | ४६ |
| निर्थंकता-बोध | ४६ |

| मित्रता | ৵৬ |
|--------------------|---|
| प्रारब्ध | 86 |
| भूठ-सत्य | ¥¢ |
| उदासीनता | Ϋ́Ε |
| माखेसाङ्लो | 88 |
| पश्चात्ताप | 38 |
| मन्थरा-प्रवृत्ति | χo |
| ज्वालामु खी | ধ 9 |
| विलदान | ४१ |
| शब्द-वीर्य | ५२ |
| डोब | ४२ |
| मागवण्डा | ×ξ |
| मुस्कान | * |
| हन्तकाली | ४४ |
| कीर्तिमान | · ** |
| रोग | XX. |
| जाल | XX |
| मन्त्रणः-स्वार्थ | પ્રદ |
| पराजित प्रारब्ध | XE |

| सूचीपत्र | | | ¥ d |
|-----------------|---|----|------------|
| पुण्यकर्म | | | 20 |
| विद्रोह | | | ४ूद |
| बगावत | | | ५६ |
| शस्त्रास्त्र | | | 38 |
| मूल्य | | | 32 |
| छल | | - | ६० |
| क्टार्थ | | · | 80 |
| स्वतन्त्रता | 9 | | ६ 9 |
| सहन-शक्ति | | | ६ १ |
| औ ट | | | 47 |
| पद्युताउ | | | ६२ |
| कुनियत | | 40 | ६३ |
| वीर्य-चेतना | | | ६३ |
| मनोरथ | | | 88 |
| महत्त्वाकांक्षा | | | ६४ |
| | | | |

विशेष द्रष्टव्य:-

१६ पेजको 'उपहार' शीर्थकको कविताको आठौँ हरफको 'सुखमय'को सट्टा 'रसमय' पढ्नुहोला ।

अग्नि-श्रृङ्गार

नेपाल

पाँ-पाँच जनाको प्रत्येक समूहमा तीन जना गुप्तचर भएको देशको नाम हो नेपाल।

होड

रोग, शोक र भोककै विश्व-व्यापी होडमा प्रथम भएर स्वर्ग पदक पो जितेछ हाम्रो देशले त।

राष्ट्रिय चरित्र

स्वार्थ मात्र पूरा हुने भए
एकले दोस्नाको पिठयूँमा
छुरा धस्न
आपसमै तँछाड-मछाड गरिरहने
राष्ट्रिय चरित्र हाम्रो
अत्यन्त उदात्त छ।

जूवा

कौडा जुन दाउमा परे पनि मार्रा पो भन्छन् ! हामीले च्याँखे थापेको मोतीटारेके खालमा त परेन ?

मूला त एउटै डचाङका रहेछन्

माथिदेखि तलसम्मका सबैकै शरीरमा मात्र होइन कि मन र मस्तिष्कसमेतमा पनि हिलैहिलाका टाटाहरू मात्र छन्, तिमी नै भन, यस्तो स्थितिमा अब म ककसलाइ मात्र भनूँ महान् अथवा क्षुद्र ?

उपहार

सत्य सत्य,
भूठ बोलेका होइनौं,
पत्यार लाग्दैन भने
यहाँका होटेलहरूसँग सोघे हुन्छ,
आतिथ्य-सत्कारमा
विश्वमै नाम कमाएका हामीहरूले
पर्यटक पाहुनाहरूको रात
प्रत्येक दिन सुखमय होओस् भन्ने उद्देश्यले
उपहार पठाउने गरेका छौं
गन्ध-मादक यौवन भएका
चार वर्ण छत्तीसै जातका
साभा फूलबारीका ताजा फूल।

खुला पत्र

मभन्दा बलवान्
संपूर्ण हजूरहरूलाइ
मैले आफ्नै
शिर-पोश सम्भिरहेको छु,
मभन्दा कमजोर
सम्पूर्ण तिमीहरूलाइ
मैले आफ्नै
पाउ-पोश ठानिरहेको छु।
भवदीय
कार्यवाहक सभापति
मध्य-वित्त समाज
नेपाल

परिचय

बेइमानी गर्ने मूल्य अठोट गरेअनुसार हातमा नपरेसम्म इमानदारमै दर्ता भैरहेका मानिसहरू मध्यकै एक जना भलादमी सम्भे हुन्छ मलाइ पनि।

सहअस्तित्व

आदेश दिने र त्यसलाइ शिरोपर गर्नेहरूकै सहअस्तित्वमा फले-फुलेको हाम्रो देशले जिन्दगीमा भोग्नुपरेकै छैन भने हुन्छ विचार-बहुल भंभाका व्यथाहरूलाइ।

जडता

नभिज्ने भैसकेका छन् हाम्रा मनहरू त, जितसुके वर्सून् न दुःख र पीडाका भरीहरू।

वर्तमान

वर्तमान भनेके सञ्चार-असत्य हो।

बकुल्ले-वृत्ति

रामनामी-पोको भित्र त माछा पो रे'छ !

मुख-पत्र

तिमी त पतनोन्मुख युगकै मुख-पत्र पो रहेछौ !

भूत

अभै लखेट्दै छ हामीलाइ त दासतापूर्ण भूतले !

शोषण

तिम्र भकारीभरित छन् नि हाम्रा पसिनाहरू।

महिमा

महिमात गाइन्छ ग्रहणकै पनि।

सहनशीलता

पापको पर्याय नै सहनशीलता रे !

आँखा

अन्धकार पखाल्न सक्ने आंखा पो आंखा !

बानी

नराम्रो होइन खतरासँग जिस्किने बानी।

प्राप्ति

विम्भिरहनुको नाम नै प्राप्ति हो।

जाल

हामी त माकुरे-जालमा पो फँसेछौं !

बादल

तिमी त हाम्र सपना-सूर्य छेक्ने बादल पो रहेछौ!

आखेट

यस्तै छ, गोली हाम्रो, शिकार भने तिम्रो!

राहु

राहुले पिरोल्न छोड्ने कहिले हो कुन्नि !

पानी

रगत पो रे'छ पिउन खोजेको पानी त !

किन-बेच

मानिसहरूकै पनि किन-बेच हुँदो रे'छ यहाँ त !

परम्परा

गुदी जित तिमीलाइ, खोस्टा जित हामीलाइ!

अनर्थ

अर्थ भने तिस्रो, शब्द भने हास्रो !

काल-चेतना

प्रकाश-मुख हुँदैछ, हाम्रो काल-चेतना।

इष्ट

सर्वोदय नै त हो हाम्रो इष्ट ।

उदात्त कामना

निभेको आगो बाली पालैपालो तापौं न।

प्रतिज्ञा

साथै जिउनेछौं, साथै मर्नेछौं।

जीवन

जीवन भनेकै प्रवाहशीलता हो।

धूप

युग मात्र सुरभित हुने भए सिलकरहन्छौं घूप भैं।

सेतु

हामी नै तहौं आकाश र भूमिलाइ जोड्ने सेतु।

छाप

वर्तमानमात हाम्रे चेतनाको छाप छ।

अनिकाल

विमाख पो गर्दोरहेछ अनिकालले त!

स्वर्ग

नर्ककै जनक भने हुन्छ स्वर्गलाइ।

वेवता

मानिसहरू नै त हुन् धर्तीका देवता।

बिन्दु

सिन्धुकै सानु रूप हो बिन्दु।

छायां

कहीं छायाको पनि अस्तित्व हुन्छ र ?

विकृति

विकृति नै त होइनौ तिमी ?

सोंढी

माथि पुग्न तिमी त लाशकै सींढी पो चढिरहेछौ।

अग्नि

अन्तमा अग्निले त स्वयम्लाइ पनि खाँदोरे'छ !

रस

रस त आगोमा पनि हुन्छ ।

काव्य

हास्य-रोदन-कलाकै नाम हो काव्य ।

भविष्य

स्वतन्त्रता, समृद्धि, शान्ति नै त हुन् हाम्रो भविष्य।

सर्प

श्रीलण्डको रूलमा एक जोडा गौमन सर्प !

परेवा

एउटा सेतो परेवा बाजक पखेटाको छायामा !

अश्र

चहुरभरि ओस-कण, निकै नै रोए भैं लाग्छ रात त!

घाम

अँगालोभरि पो हाँसिरहेछ माघे-घाम त!

गन्ध-चोर.

निकै नै चर्चित पो रे'छ, गन्ध चोर्ने बानी बतासको त!

इन्द्रेणी

मेरें रहरले ओढने गरेको चुनरी नै तहो नित्यो इन्द्रेणी !

आशीर्वाद

पृथ्वीलाइ आकाशके आशीर्वाद हो सूर्य !

स्थायी-भाव

सृष्टि-काव्यको स्थायी-भाव नै सीत्कार-सुख हो ।

मोह

दगुरिरहुँ भैं लाग्छ सधैं-सधै नै वृष्णिकाका छलहरूमै !

मधुमास

वर्गैचाभरि हाँसिरहेछन् विरूवाहरू, मधुमास आएछ क्यारे !

रहर

तिमिर धुने रहर भने धेरैको, चन्द्रमा भने एउटै मात्र !

सौन्दर्य

वैलाउला है गन्ध-बहुल सौन्दर्य, नछोउन् लोभी आँखाहरूले !

भूइँचम्पा

रातले बालेका भूइँचम्पाहरू त हुन् नि ती तारकाहरू आकाशका ।

ऐश्वर्य

समय सापेक्ष्य प्रत्युत्पन्नता नै मनको ऐश्वर्य हो !

अर्थ-संकेत

भ्रू-भङ्गकै शब्दावलीत हुन् नि अनुरागका अर्थ-सङ्केतहरू।

सृष्टि-माधुर्य

सृष्टि-माधुर्य नै त हुन् नि अनुरागका स्थूल-व्यञ्जनाहरू।

अनुराग

सर्बेलाइ चाहिने, समाप्त भने कहिल्यै नहुने हृदयकै सौन्दर्यको नाम हो अनुराग।

चन्द्रमा

भूमिक प्रक्षेपण पो रे'छ चन्द्रमात!

काल-चेतना

भूमिकै चंक्रमणशीलताबाट काल-चेतनाको जन्म भएको हो।

घोषणा

सूर्यले घोषणा गरेको सुनें, पृथ्वीत उसके आत्मजारे!

शबद-शक्ति

विद्रोह-व्यञ्जक शब्द-शक्ति त तरवारकै प्रहार भैं मारक पो हुन्छ !

सङ्घर्ष

खल्तीभरि आलोक भर्ने भए सङ्घर्ष त गर्नैपर्छ अँध्यारोसँग ।

बीर्य-होनता

मध्न चाहिँ अल्छी मान्ने, नौनीको भने लोभ गर्ने मानिसहरूकै जमात त होइनौं हामीहरू!

विष्णुमती

विष्णुमती त हामीहरू भैं नै भन्-भन् वढी अघोर-पन्थी पो हुँदैछ !

छाप

रछाने हाम्रो व्यक्तित्वमा सुङ्गुरे-संस्कृतिकै फोहरी छाप छ !

सीमाना

जहाँ अरिङ्गालका सयौं-सयौं गोला पहरामा बसेका छन् त्यहींबाट प्रारम्भ हुन्छ देशको सीमाना हाम्रो ।

आत्म-गौरव

हो, साना त छौं हामीहरू, किन्तु आगाका वीउ भैं।

वीर्य-चेतना

अंशुमाली सूर्यले भैं नै कजाउनेछौं हामीले पनि समयको घोडालाइ।

निर्बन्धता

मुठ्ठोमा त थुन्न सिकन्न है, घामको स्वभाव त निर्बन्ध पो हुन्छ !

खाँचो

कैंचीके च्यापमा परेर त इस्पातको व्यक्तित्व चाहिएको हामीलाइ।

नेतृत्व

हामीले चिताएका तर गर्न नसकेका काम पो गरेछौ तिमीले त! सलाम छ!

असावधानीः त्यसको परिणाम

आसपासे धिमराले पो खाएछ हामीलाइ ओत दिने गरेको रूखलाइ त!

वीर्य-चेतना

वातावरण सौरभमय वनाउन काँढाके माभमा पनि फुलिरहेका छन् गुलावका फूलहरू !

विश्व-बन्धुत्व

डहरबाट निस्केपछि पो थाहा पाएँ, मैले घुमेका देश र भेटेका मानिसहरू आपने र आफन्तहरू ने रहेछन् !

सङ्कल्प-सौन्दर्य

माटाका एक सय छपन्ने प्यालामा घाम नभरियुञ्जेल सूर्य निचोरिरहन्छु म।

मृत्यु-बोध

पर्सन पो थालेछौं, कसैको भाकलमा त परेनौं हामीहरू ?

वरदान

मेरो पूजाबाट प्रसन्न भई वरदान-स्वरूप मलाइ तरवार पो दिइन् चण्डीले त!

अर्थ-होनता

घत्तेरी, विना खल्तीकै कोट भैं पो भएछौं हामीहरू !

निरर्थकता बोध

कागज मात्र भएर के गर्नेर? हातमा कलम पनि छैन, मसी पनि छैन!

मित्रता

ठीके भन्यौ तिमीले, अँध्यारो र प्रकाशको मित्रता त आदर्श पो हुन्छ ।

प्रारब्ध

एउटै प्रारब्ध भएकोले नै त जूनसँग तिमी भैं नै म पनि अन्धकारसँग खेलिरहेको छु।

क्ठ-सत्य

घेरैले बोलेको भूठ पनि सत्य हुन्छ भनेको आज पो यथार्थ भयो!

उदासीनता

मैले आँखा निचम्लेको भए त्यसरी रातलाइ दिन बनाउन गाह्न पर्नेथियो निश्चय पनि तिमीलाइ!

माखे-साङलो

नखाऊँ भने दिनभरको शिकार, खाऊँ भने आफ्नै कान्छा बाबुको अनुहार!

पश्चात्ताप

दुस्तर र दुर्लङ्घ्यकै बीचको पहिरो जाने ढिस्कोलाइ नै आधार बनाएछु मैले त!

मन्थरा-प्रवृत्ति

पर्याप्त निर्यात गर्न पुग्ने गरी हामीहरूले त निकै नै आर्जन गरेछौं मन्थरा-प्रवृत्तिहरू !

ज्वालामुखी

इतिहासले कोल्टे फेर्न खोज्यो क्या रे, फुट्न पो थालेछ ज्वालामुखी त ठाउँ-ठाउँमा !

बलिदान

सधैंकै लागि इतिहास गौरवान्वित हुने स्वतन्त्रताको मूल्य त बलिदान पो हुन्छ !

शब्द-वीर्य

मेरै

शब्द-वीर्यलाइ घारण गरेरै त आकाशमा दिनहुँ अर्थ-प्रकाश प्रसव गर्न समर्थ भएकी उषा।

डोब

प्रात:

दिनहुँ हाम्रा निधारमा पर्ने गरेका उज्याला डोव सूर्यकै पाइलाका त हुन् नि ।

भागबण्डा

गएकालाइ हिजो र आउनेलाइ भोलि पर सारेर, आइसकेका सबैलाइ मैले त आज मात्र राखिदिएको छु!

मुस्कान

मैले हिर्काएक भटारोबाट भरेकात हुन् नि त्यतिका प्रकाशका फूल तिमीहरूका औठमा।

हन्तकाली

बोल्नु नै अपराध मानिन्छ भने कुन भेगका हुन् भनौं बारम्बार हाम्रो सुख-चैन लुटिरहने यी हन्तकालीहरूलाइ!

कोति-मान

अनिकालकै बीउ छरेर, महामारी भित्र्याउने कीर्ति-मान पो स्थापित गरेछ हाम्रो देशले त !

रोग

रोग त निर्मूल हुनै सकेन, धामी पनि, बोक्सी पनि एउटैकै फन्दामा त परेनौं हामीहरू ?

जाल

जिति भागे पिन माछोत उसके जाबीभित्र भने भें पो भएछौं हामीहरूत!

मन्त्रणा-स्वार्थ

बेपार गरूँ भने पूँजी छैन, कसरी सम्पत्ति जोड्ने हँ ? राजनीतिमा लाग न।

पराजित प्रारब्ध

लोभ लाग्दा तिम्रा ती गाँसहरू प्रत्येक नै अरूकै थालबाट खोसिएर आएका हुन् भन्छन् नि, हारेका प्रारब्धहरूले त्यस्तै त भन्छन् नि ।

सूचीपत्र

अपराधको सूची त भन्-भन् बढी वृद्धि हुँदैछ ! अव त स्वयम्लाइ फाँसी दिनुपर्ने वाध्यताहरूबाट पनि मुक्त हुन नपाइने पो भएछ, कठै !

पुण्य कर्म

सबै किसिमका वन्धनहरूबाट मुक्त गराउने कामहरूलाइ न पुण्य-कर्म पो भन्दा रहेछन् आज-कल !

विद्रोह

हाम्रा ललाटमा कर्म-फलका अक्षर लेख्नेहरू ग्रह र नक्षत्रहरू ने हुन् भने तिनका विरोधमा विद्रोह गरौं, आऊ !

बगावत

उडानको लागि व्यापक आकाश खोज्नुको अर्थ नै विद्रोह हो भने त्यस्तो विद्रोह त बार-बार नै गरिरहने कुरा पो गर्छन् चराहरू त!

शस्त्रास्त्र

युग-युगदेखि हामीहरूलाइ कमारा बनाइरहनेहरूके शस्त्रास्त्र त हुन् नि निराशा, कुण्ठा र पलायनका हाम्रा प्रवृत्तिहरू।

मूल्य

स्वाघीनता र ऐश्वयं तथा शान्तिके पूर्व-शर्तहरू त हुन् नि बलिदान-मुख सङ्घर्ष-चेतनाहरू।

छल

दयनीयताको उपज नै दया हो भन्ने सत्य यथार्थ हुँदैछ भन्-भन् वढी आजकल !

क्टार्थ

क्टार्थ खुलस्त हुँदैछ, 'नूनको सोभो गर्नुपर्छ'को अर्थ नै दासतालाइ चिरञ्जीवी बनाउनु हो !

स्वतन्त्रता

काठी कसेका मानिसहरूकै पिठयूँमा मानिस नै वसी लेक-बेंसी घुम-फिर गर्ने स्वतन्त्रता त हामीकहाँ पनि छ ।

सहन-शक्ति

नारकीय पीडालेसमेत हार खाने सहन-शक्ति भएका मानिसहरू नै त देश-भक्तको सूचीमा परेका छन् हाम्रो देशमा।

आंट

दिनहुँ आपन् जमात घट्दै जान थालेपछि निर्णय त गरे मूसाहरूले, किन्तु बिरालोको घाँटीमा घण्टी बाँध्ने आँटचाहि कसैले पनि गरेनन्।

पछुताउ

माभीहरूले मतो गर्दा-गर्दे नै बाढीको पानीले त नौओटै गाउँ पो डुबाएछ !

कुनियत

संरक्षणको दायित्व पतिको वहन गर्न नसक्ने कमजोर धेरैकै हातबाट मुक्त गरेर पृथ्वीलाइ पाञ्चालोकै गौरव प्रदान गर्ने कामनाले सल्लाह गर्देछौं आपसमा पाँचौटै भाइॐ हामीहरू।

वीर्य-चेतना

हामीहरूमै भैं वीर्य-चेतना जाग्रत भैरहनुपर्छ वीरभोग्या वसुन्धराको मर्म बुभ्तन त !

≈ शक्ति राष्ट्रहरू

मनोरथ

यहाँ प्रस्तुत भैरहेका मेरा शब्दहरूमै अभिव्यक्त भैरहून् मानिसहरू प्रत्येककै मुटुका ढुकढुकीहरू ।

महत्त्वाकाङक्षा

प्रस्तुत अर्थ-उदात्तता भएको शब्द-सौष्ठवकै वाहन यी मेरा अक्षरहरू सधैं नै अक्षर भैरहून् !



(٤8)

कविको संक्षिप्त परिचय

नाम- केदारमान व्यथित । जन्म- १६७१ साल कार्तिक । जन्मस्थान-पूर्व १ नं . सिन्धुपाल्चोक बाँसवारी बाउनेपाटी । राजनीतिक गतिविधि- १६६४ वि.

सं. देखि ।

कारावास- नेपाल र भारतमा गशे साढे ६ वर्ष ।

साहित्यिक गतिविधि- २००२ साल

देखि । नेपाली सांस्कृतिक परिषद्, नेपाली साहित्य परि षद् र नेपाली साहित्य संस्था-नका संस्थापक सदस्य तथा सांस्कृतिक परिषद्का सचिव र साहित्य परिषद् एवं साहित्य संस्थानका भूतपूर्व ग्रध्यक्ष । मान-पदवी-श्री ५ को सरकारको विभिन्न मन्त्रालयको भूतपूर्व मन्त्री एवं नेपाल राजकीय प्रज्ञाप्रतिष्ठानको भूतपूर्व कुल-पति । हाल सभासद,राजसभा । ग्रतिज्योतिर्मय त्रिशक्तिपट्ट प्रथमद्वारा विभूषित । भ्रमण- यूरोप र एशियाका केही

देश।

कविका काव्य-कृतिहरू

नेपालीमा

१. सङ्गम

१० श्रावाज

२ ं०६ सालको कविता

११. वदलिरहने बादलका श्राकृति

३ प्रणव

१२ मेरो सवनामा− हास्त्रो देश

४ एक दिन

र हामी

५. त्रिवेणी

१३. मेरी प्रेयसी- प्रजातान्त्रिक

६ सञ्चियत।

स्वतन्त्रतः

७. जुनेली

१४. रस- त्रिफला

≒. नारो−रस, माधुर्य, ग्रालोक

१४ - ग्राग्न- शृङ्गार

६. सप्तपर्ण

१६. फेरि ग्रकों एउटा कुरुक्षेत्र

नेवारीमा

१ प्रतीक्षा

३. स्वबिष्याःगुम्ये

२. दिवस-चित्र

४. छ्वास

ग्रंग्रेजोमा

1 Selected Poems